RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-03
March-2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[UGC Listed Journal]

पुरुष! तुम्हारा आधार स्त्री

प्रवीन देवी

M.A., M.Phil., NET M.D.U., Rohtak (India)

"ऐसी उपेक्षा नारियों की जब स्वयं हम कर रहे।
अपना किया अपराध उनके शीश पर धर रहे।।"[1]

प्रस्तावना

समाज में जो छवि स्त्रियों की पुरुषों ने प्रस्तुत की है, वह केवल पुरुषों द्वारा कल्पित छवि है। इसके विपरीत यदि स्त्री को पुरुषों के समान अवसर दिए जाए तो वह किसी भी क्षेत्र में पुरुषों से हेय नहीं है। एक स्त्री किसी भी परिस्थिति में अपने आप को ढाल सकती है बजाय एक पुरुष के। समाज में स्त्रियों को 'आधी दुनिया' नाम से अभिहित किया जाता है, अगर इनको 'दुनिया की धुरी' कहा जाए तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। पुरुषों का वजूद भी स्त्रियों से है, परन्तु वह इस बात को भूलकर स्त्रियों का दमन करता है और समाज के सभी पैमानों को पुरुषत्व में बाँधता चला जाता है और स्त्री को हमेशा हाशिये पर लेकर चलता है जो स्त्रीत्व पर प्रहार है।

विषय वस्तु

पूरी नारी जाति को ही अबला विशेषण दे दिया गया है। चाहे वह अपनी चहारदीवारी को लाँघकर कई क्षेत्रों में क्यों न आ गई हो परन्तु फिर भी वह समान सम्मान की अधिकारिणी नहीं बन पायी है –

"घर का सारा हिसाब किताब उन्हीं के हाथ में,
व्यवहार उनके हैं दयामय सब किसी के साथ में।
पाक–शास्त्र वे विशारदा हैं और वैद्याक जानती,
सबको सदा संतुष्ट रखना धर्म अपना मानती।।"[2]

जब कभी भी हमारे सामने दो पक्ष होते हैं तभी हम उनकी आपस में तुलना कर सकते हैं परन्तु पुरुष समाज ने तो स्त्री को नगण्य माना है और संपूर्ण समाज पर ही अपनी प्रभुसत्ता कायम कर रखी है। स्त्री के अधिकारों को तो पुरुषप्रधान समाज कुचल देता है क्योंकि उनके तुगलकी फरमानों के सामने स्त्री अधिकार दम तोड़ने लग जाते हैं इसके विपरीत यदि घर में या बाहर कोई स्त्री काम करती है तो उसे उसके कर्त्तव्य का एहसास करवाया जाता है –

आलस्य में अवकाश को वे व्यर्थ ही खोती नहीं
दिन क्या, निशा में भी पति से प्रथम सोती नहीं,
सीना, पिरोना, चित्रकारी जानती हैं वे सभी –
संगीत भी, पर गीत मन्दे वे नहीं गातीं कभी।।[3]

नारी के कामकाज का कभी भी आकलन नहीं होता है भले ही वह दिन–रात पुरुषों के समान कार्य करे परन्तु अपनी घरेलू जिम्मेदारियों से पल्ला नहीं झाड़ सकती है। अगर वह अपनी इन जिम्मेदारियों का सही तरह से निर्वाह नहीं करती है तो उसे प्रताड़ित होना पड़ता है।

नर–नारी की जननी तथा शुभ शान्ति की स्त्रोतस्वती।
हा दैव! नारी जाति की कैसी यहाँ है दुर्गति।।
क्या दोष उनका किन्तु जो उनमें गुणों की है कमी
हा! क्या करें वे जबकि उनको मूर्ख रखते हैं हमीं।।[4]

अल्पज्ञता का आरोपण भी ठीक नहीं है क्योंकि जब स्त्रियों को पुरुषों के समान पढ़ने–लिखने के अवसर ही नहीं प्राप्त होंगे तो क्या बुद्धि घर बैठे अपने आप विकसित हो जाएगी। आज तो वास्तविकता यह है कि महिलाओं को शिक्षित होने के बावजूद भी दबाया जाता है। किसी भी महिला का किसी कार्यक्षेत्र में जाना पुरुष द्वारा निर्धारित होता है। शादी से पूर्व माता–पिता और शादी के बाद ससुराल पक्ष द्वारा।

"चलिए, अब तो किरणें डूब रही हैं और मुझे भी काम निपटाकर छुट्टी पर जाना है।"

"छुट्टी!" आश्चर्य से झल्लाकर मालती ने कहा

"हाँ, अब मैं काम न करूँगी।"

"क्यों? तुझे क्या हो गया बूटी।"

"मेरा ब्याह इसी महीने में हो जाएगा" – कहते हुए स्वतन्त्र युवती ने हँस दिया। वन की हरिणी अपने आप जाल में क्यों फँसने जा रही है।" मालती को आश्चर्य हुआ।[5]

जयशंकर की कहानी 'परिवर्तन' में मालती और चन्द्रदेव जैसे शादीशुदा रिश्ते को ढोते–ढोते यन्त्रवत हो गए हैं परन्तु बाद में बूटी नामक पहाड़ी लड़की का आत्मविश्वास देखकर उन दोनों के अन्तस् में भी चेतना आती है और दोनों में परिवर्तन आता है।

अल्पना मिश्र – कहानी नीड़

"अच्छा जानना चाहती है इनकी नौकरी के बारे में। मैं बताता हूँ। इ क्या बता पावेगी? कुछ जानती हो तब न। क्या थी शादी के वखत और अब देखए कैसे ट्रेनिंग देकर चमका दिया है मैंने। मैंने पढ़ाया, कितनी मेहनत की इनके ऊपर।

"जी, जी।" बॉबी ने बहुत मद्धिम आवाज में, कुछ परेशान सी होते हुए कहा।"

"अब मिमिया क्या रही हो। ठीक से बताओ। मायके वालों को देखकर तो बिल्ली भी शेर हो जाती है।" वे फिर हँसे।

इस कमरे में हँसने पर अधिकार सिर्फ उन्हीं को था।

तभी एक चार–पाँच साल का लड़का उछलता हुआ आया।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

पति महाशय ने इशारा करते हुए कहा, ''यही है हमारे सुपुत्र जी। थोड़ा नटखट हैं लेकिन शार्प ब्रेन है। मैं तो कहता हूँ कि लड़को को स्वतंत्र बढने देना चाहिए। कोई लड़की तो है नहीं कि छुई–मुई रहे।''

लड़कियों को भी छुई–मुई क्यों बनाना? मुझसे रहा नहीं गया। वे चिढ़ उठे। आप नारीवाद से प्रभावित हैं क्या? हिन्दुस्तान में ये नारीवाद–फारीवाद कुछ नहीं चलेगा। जितने ये आदमी नारीवादी उपदेश झाड़ते फिरते हैं, जरा देखिए अपने घरों में क्या करते हैं? अरे भाई घर के भीतर स्त्री की शोभा है। चलो! पढ़ा लिखा दिया जमाने को देखते हुए नौकरी भी करा लिया। नौकरी से घर का फायदा ही है लेकिन मर्यादा भी तो कोई चीज है। विदेशी मामला है भाई, हमारे ऊपर नहीं चलेगा। जाएं यूरोप में, नारी क्रांति कराए। क्यों भाई, आप तो समझते ही होंगे।'' उन्होंने हिमेश को लक्ष्य किया।

सब इनके मायके वालों का यही हाल मेरे सामने टिक ही नहीं पाते हैं।'' फिर वे किचन की दिशा में मुड़े।

''क्या भाई बीरबल की खिचड़ी पकी कि नहीं?'' फिर वे हँसे।

उनकी हँसी पूरे वातावरण में कार्बनडाई ऑक्साइड घोल रही थी। मुझे लग रहा था कि मेरा दम घुट रहा था। हियेश का भी यही हाल था।

''अरे, अरे, बस, बस।'' कहते हुए पति महाशय बेटे के मुक्कों से अपने आपको बचाने लगे। उनके बचाने के तरीके से बच्चे को अपनी ताकत बढ़ती हुई लगी और अचानक ही वह गालियाँ बकने लगा। इस पर बच्चे को कुछ कहने की बजाय पति महोदय बॉबी पर बरसे, ''देख रहे हैं आप लोग क्या करती हैं ये। यही करती है ये। गाली सिखती है। बरबाद करने पर तुली है मेरे घर को। जितना मैं बच्चे में अच्छे चरित्र का निर्माण करना चाहता हूँ उतना ये बरबाद कर रही हैं। बोलो, बताओ, कौन सिखाता है ऐसी गंदी बातें।''

''मम्मी।'' बच्चे ने अचानक रुककर कहा और फिर खिसकने लगा।

''देख लिया आप लोगों ने।'' पति महोदय ने ललकार कर कहा।

बॉबी सिर झुकाये बैठी थी। बॉबी और गाली नहीं, नहीं, हम मान ही नहीं सकते।

''मैं क्यों सिखाऊँगी?'' अचानक बॉबी ने दूसरी तरफ मुँह करके कुछ तेज आवाज में कहा और उठकर भीतर जाने लगी। जाते–जाते धीमे गुस्से से भरे स्वर में बड़बड़ाई – ''मैंने भी बच्चे को तुम्हारे मुकाबले तैयार न किया तो ...''[6]

अल्पना मिश्र की नीड़ कहानी के ये कुछ अंश दिए गए हैं जिसमें बॉबी के पति महाशय की स्त्रियों के प्रति मानसिकता को दिखाया गया है। वह एक पढ़ा–लिखा नवयुवक है और बॉबी भी पढ़ी–लिखी है परन्तु फिर भी पति महाशय की मानसिकता में कोई सुधार नहीं है। समाज में साक्षरता के स्तर में सुधार होने के बावजूद भी मानसिकता में ज्यादा सुधार नहीं आया है। जिसका एक बड़ा कारण हमारी परम्पराएँ व मर्यादाएं हैं। कुछ रस्में तो परम्परा का हवाला देकर स्त्रियों पर लाद दी जाती हैं और यदि एक स्त्री उन परम्पराओं को तोड़ने की चेष्टा भी करती है उसे मर्यादाओं की याद दिलाई जाती है।

निष्कर्ष

क्या स्त्री इतनी महत्त्वहीन हो गई है कि घर–परिवार में उसको एक वस्तु समझा जाता है। परिवार में अगर कुछ अच्छा होता है तो उसका श्रेय पुरुष को मिलता है और कोई अशोभनीय कार्य अगर होता है तो उसका दोष स्त्री पर मढ़ दिया जाता है। एक स्त्री को अभिव्यक्ति का भी अवसर नहीं दिया जाता है। जब तक स्त्री–पुरुष में सामंजस्य नहीं होगा तब तक स्त्री से संबंधित सभी चर्चाएँ बेकार हैं। मात्र चर्चा करना इस समस्या का समाधान नहीं है। चर्चा करने वाले लोग ही उसको धरातल पर नहीं ला पाते हैं, यही सबसे बड़ी विडम्बना है। जब स्त्री पुरुष समान रूप से रहेंगे तो एक स्वस्थ समाज का निर्माण होगा क्योंकि समाज हमीं लोगों से बना है। जब हम अपने गिरेबान में झाकेंगे तो आईना हमें खुद–ब–खुद दिख जाएगा और यह सब देखकर हम उसमें सुधार कर सकते हैं।

स्त्री–पुरुष अगर सामंजस्य के साथ अपने–अपने दायित्वों को निभाएंगे तो समस्या का समाधान अवश्य निकल सकेगा। स्त्री–पुरुष अगर स्त्रीत्व और पुरुषत्व के आवरण को छोड़कर मनुष्यता की तरफ अग्रसर होंगे तो ही इस संकीर्णता से उभर सकेंगे। संवैधानिक संशोधन के बावजूद भी हमारी सामाजिक व्यवस्था रूढ़िग्रस्त है क्योंकि यह सामाजिक ताना–बाना उन संवैधानिक संशोधनों को अमल में नहीं लाता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. मैथिलीशरण गुप्त, भारत–भारती, काव्य
2. उपरिवत्, पृ. 163
3. उपरिवत्, पृ. 164
4. उपरिवत्, पृ. 229
5. जयशंकर प्रसाद, परिवर्तन, कहानी
6. अल्पना मिश्र, नीड़, कहानी, www.google.com